स्टीफ़न ज़्विग
भाग्य की
विडम्बना

: १ :

भाग्य की विडम्बना

१/

क्रेसेंजिया अन्ना इलौइसिया फिकरहूबर की उम्र उन्तालीस बरस की थी। उसका जन्म (एक नाजायज लड़की के रूप में) एक पहाड़ी गांव में हुआ था, जो इंसब्रुक से ज्यादा दूर नहीं था। नौकरानी के उसके परिचय-पत्र के विशेष गुण के खाने में एक लकीर खींच दी गई थी, जिसका मतलब था कि उसमें कोई खास बात नहीं है। लेकिन उस तरह के कागजों को भरनेवाले कर्मचारियों को अगर उसमें गुणों का ब्यौरा देना ही पड़ता तो वे जरूर ही इस तरह लिखते—"थके-मांदे, हड्डीले, दुबले-पतले पहाड़ी टट्टू के समान।" इसमें शक नहीं कि उसके नीचे के भारी-भरकम होंठ, गोल भूरे चेहरे, बिना बरौनियों की नीरस आंखों, और इन सबसे भी अधिक, उसके सूखे बालों से, जो कि वैसलीन से माथे पर चिपके रहते थे, टट्टू का-सा ही आभास होता था। उसकी चाल भी खच्चर की तरह कठोर और कुछ बेतुकी थी—ठीक उस जानवर की तरह, जिसे हर मौसम में लकड़ी का भारी गट्ठर लादे एक ही कठिन और चट्टानी या दलदली रास्ते पर ऊपर-नीचे आना-जाना पड़ता है। दिन-भर के काम से छुट्टी पाकर क्रेसेन्ज अपनी लकड़ी जैसी उंगलियों को पकड़कर और बड़े भद्दे ढंग से कुहनियों को फैलाकर बैठ जाती थी और ऊंघने लगती थी। तब उसमें खच्चरों की निस्बत, जो दिनभर का काम खत्म होने पर धीरज से चुपचाप अस्तबल में खड़े रहते हैं, ज्यादा होशियारी नहीं दिखाई देती थी।

क्रेसेंज की हालत बड़ी अजीब-सी थी। कोई नया विचार बड़ी मुश्किल से उसके दिमाग में घुसता था। ऐसा लगता था मानो उस विचार को चलनी के बन्द सूराखों में से निकलकर आना पड़ा हो। लेकिन एक बार बात समझ में आ जाती तो फिर उसे वह ऐसे पकड़ रखती थी, जैसे कोई कंजूस पैसे को पकड़कर रखता है। वह कभी पढ़ती नहीं थी, यहांतक कि अखबार या अपनी प्रार्थना की किताब भी नहीं। लिखने में उसपर बड़ा जोर पड़ता था। हिसाब की बही में उसके भद्दे अक्षरों को देखकर उसकी वह भोंड़ी और अजीब आकृति याद आती थी, जिसमें स्त्री जैसा आकर्षण जरा भी नहीं था। उस की हड्डियां, उसका माथा, उसके कूल्हे और उंगलियों के जोड़ जितने कठोर थे, उतनी ही कठोर उसकी आवाज थी, जो उसके निराले उच्चारणों के बावजूद ऐसे खड़खड़ाती थी जैसे ज़ंग लगे लोहे के फाटक के कब्जे खड़खड़ाते हैं। उसकी आवाज में लगी यह ज़ंग कोई अचरज की बात नहीं थी, क्योंकि वह कभी एक शब्द भी फालतू नहीं बोलती थी। हँसते तो उसे किसी ने देखा ही नहीं। इस मामले में भी वह निचले दर्जे के पशुओं से मिलती-जुलती थी।

वर्णसंकर सन्तान होने के कारण उसका पालन-पोषण कम्युनिटी ने किया था और बारह बरस की उम्र में उसे पहले-पहल एक रेस्तरां में काम करने के लिए भेज दिया गया था, लेकिन बाद में रात-दिन मेहनत करके अच्छा नाम कमा लेने के उपरान्त उसे बड़ी लाइन के दूसरे दर्जे के किसी होटल में रसोई के काम पर भेज दिया गया। क्रेसेन्ज पांच बजे उठ जाती थी। झाड़ू-बुहारू करती थी, फर्श रगड़ती थी, कमरे की चीजें संभालती थी, आग जलाती थी, आटा गूंधती थी, खाना पकाती थी, कपड़े धोती थी, कपड़ों पर लोहा करती थी।

उसके काम का यह सिलसिला बहुत रात गये तक चलता रहता था। वह कभी एक दिन की भी छुट्टी नहीं मांगती थी। अलावा गिर्जे के वह कहीं भी नहीं जाती थी। रसोईघर की आग उसका सूरज थी और जंगल से उसका बस इतना परिचय था कि आग जलाने के लिए उसे वहां से लकड़ियां इकट्ठी करने जाना पड़ता था।

लोग उसे हैरान नहीं करते थे। शायद इसका कारण यह था कि उसने पच्चीस बरस कल-पुर्जे की तरह से बिताये थे और प्रकृति माता ने उसे जो भी थोड़ी-बहुत सुन्दरता दी थी, उससे वह भी छिन गयी थी। यह भी हो सकता है कि उसकी ओर अगर कोई हाथ बढ़ाता था तो वह बड़े भयंकर रूप से उसका विरोध करती थी। उसे आनन्द केवल एक ही चीज में आता था, और वह था पैसा जमा करना, क्योंकि उसमें धन इकट्ठा करने की किसानों जैसी आदत थी। उसे यह डर लगता था कि जब वह बूढ़ी हो जायगी तो उसे कम्यूनिटी के ऊपर फिर निर्भर करने के लिए लाचार होना पड़ेगा। दान की कड़वी रोटी से उसका गला घुटता था।

धन की यह लालसा ही उसे सैंतीस बरस की उम्र में उसकी जन्मभूमि से बाहर ले गयी। नौकरी दिलाने वाली किसी एजेंसी की मैनेजर तिरोल में गर्मी की छुट्टियां बिताने आई थी। क्रेसेंज को भूत की तरह काम करते देखकर उसने कहा कि इतनी मेहनत से तो वियना में उसकी दूनी कमाई हो सकती है। क्रेसेन्ज को भला और क्या चाहिए था!

रेल के सफर में क्रेसेन्ज हमेशा की तरह चुप रही और अपनी गोद में उस टोकरी को रखे हुए खामोश बैठी रही, जिसमें उसका सारा सामान था, हालांकि टोकरी के बोझ से उसके घुटने दर्द करने लगे। कुछ भले मुसाफिरों ने उससे कहा भी

कि लाश्रो, उस टोकरी को उठाकर सामान की जगह पर रख दें, लेकिन उस हठी स्त्री नें साफ इन्कार कर दिया, क्योंकि उसके देहाती दिमाग में बड़े शहर को लेकर, जहां वह जा रही थी, दो ही बातें थीं--धोखाधड़ी श्रौर चोरी।

वियना पहुंचकर श्रकेले बाजार जाने की हिम्मत जुटाने में उसे कई दिन लगे, क्योंकि शुरू-शुरू में भीड़ को देखकर उसके होश गायब हो जाते थे। लेकिन जिन चार सड़कों पर उसे जाना होता था, उनसे एक बार परिचित हो जाने पर वह श्रकेली जाने लगी श्रौर टोकरी हाथ में लटकाये श्राराम से वहां पहुंच जाती थी। नयी जगह पर वह ठीक पहले की तरह घर की सफाई करती थी। रात को नौ बजे तिरोल में श्रामतौर पर लोग बिस्तर में चले जाते थे। क्रेसेन्ज भी सोने चली जाती थी श्रौर सवेरे बुलाहट होने तक वह जानवर की तरह मुंह खोले गहरी नींद में सोती रहती थी।

कोई नहीं कह सकता कि उसे नयी जगह पसन्द थी या नहीं। शायद वह खुद भी नहीं जानती थी। उसकी तनहाई को कोई भंग नहीं कर सकता था। उसे जो हुक्म मिलता था, उसके लिए वह 'बहुत श्रच्छा' कह देती थी या श्रगर मन में चिड़चिड़ाहट होती थी तो कंधे हिला देती थी। श्रपने साथी नौकरों की उसे परवा न थी, क्योंकि सम्भवत: उनके चिढ़ाने या मजाक उड़ाने में उसका तनिक भी रस न था। केवल एक बार उसका धीरज छूट गया, जबकि एक दूसरी खुश-मिजाज वियनानी नौकरानी ने उसके उच्चारण की खिल्ली उड़ाई। गुस्से में भरकर क्रेसेंज ने चूल्हे से जलती हुई लकड़ी निकाली श्रौर उस खतरनाक हथियार को घुमाती हुई उस तंग करनेवाली लड़की की श्रोर झपटी। वह लड़की डर से चीखती हुई वहां से भाग गयी। उसके बाद फिर क्रेसेन्ज को छेड़नें की किसीकी हिम्मत न हुई।

२/

हर इतवार के सवेरे ही क्रेसेंज अपनी बड़े घेर की स्कर्ट पहनकर और तिरोली टोपी लगाकर गिर्जा जाती थी। उसे एक दिन की छुट्टी मिलती थी, लेकिन सिर्फ एक बार उसने वियना में घूमने की कोशिश की। वह ट्राम में नहीं बैठी। चक्करदार सड़कों पर घूमती-घामती आखिर में वह डेन्यूब पर पहुंची और उसकी जल-धारा को ऐसे घूरती रही, मानो वह उसकी कोई दोस्त हो और फिर मुड़कर भीड़-भरी बड़ी सड़कों को साव-धानी से बचाती हुई लौट आई।

जब वह पहली बार इस तरह सैर-सपाटे के लिए गई थी तो उसे जरूर मायूसी हुई होगी, क्योंकि उसके बाद फिर उसने ऐसा नहीं किया। इतवार के खाली दिन वह सिलाई करना पसन्द करती थी या खिड़की में मौज से बैठे रहना। इस तरह राजधानी में आकर उसकी जिन्दगी के क्रम में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, सिवा इसके कि हर महीने के अन्त में दो की जगह चार नीले नोट उसके थके और कड़े हाथों में आ जाते थे। उन नोटों को वह हमेशा शक के साथ उलट-पुलटकर देखती थी। उसके बाद उनमें से हरएक को अलग-अलग मोड़ती और तह करती, फिर एक के ऊपर एक जमा कर लकड़ी के उस कामदार पीले बक्स में रख देती, जिसे वह गांव से अपने साथ लाई थी। उस छोटी-सी बेत की तिजोरी में मानो उसके जीवन का सर्वस्व छिपा था। उसकी चाबी को वह हमेशा रात के समय तकिए के नीचे रख लेती थी। दिन में वह चाबी कहां रहती थी, इसका घर में किसीको पता न था।

उस अजीबोगरीब प्राणी की यही विशेषताएं थीं। उसे प्राणी तो कहना ही होगा, हालांकि उसके मानवीय गुण विचित्र ढंग से दब गये थे। शायद कोई दूसरी अधिक सामान्य स्त्री ज़्यादा दिन तक नौकरानी के रूप में उस नौजवान बैरन वॉन लैंडरशीम के घर टिक नहीं सकती थी। वहां का वातावरण इतना कशमकश से भरा था कि आम तौर पर नौकर बड़ी जल्दी काम छोड़ने को कह देते थे। मालकिन इतना चीखकर बुरा-भला कहती थी कि वे उसे बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। मालकिन एक बहुत ही पैसेवाले व्यापारी की लड़की थी और उसकी बैरन के साथ जान-पहचान किसी पहाड़ी मुकाम पर हुई थी। बैरन उससे कई बरस छोटा था और उसमें कोई खास बात नहीं थी। गले तक वह कर्ज में डूबा था। लेकिन देखने में वह बड़ा सुन्दर था और उसका व्यवहार बड़ा मधुर था। पैसे से शादी करने के लिए वह उधार खाए बैठा था। उन दोनों के बीच शादी की बात झटपट तय हो गई, हालांकि लड़की के मां-बाप, जो बैरन से ज्यादा ठोस लाभ पाने के लिए उत्सुक थे, बराबर विरोध करते रहे। शादी के कुछ दिन बीतते-बीतते लड़की ने देखा कि उसके मां-बाप जो कहते थे, वह ठीक था। विवाहित जीवन की जिम्मेदारियों को पूरा करने से ज्यादा उसके खाविन्द की दिलचस्पी दूसरे कामों में थी। उसने इतना तक नहीं बताया था कि उसके ऊपर कर्ज का बोझ कितना है।

स्वभाव का वह बहुत अच्छा था, साथी भी मजेदार था, लेकिन उसका कोई उसूल नहीं था और अपने खर्चेको व्यवस्थित करने की हर कोशिश को वह घटिया लोगों के पूर्वाग्रह की उपज मानता था। वह शादी से पहले की तरह खुले हाथ रहना चाहता था और बीवी, जिस तरह वह ऐसेन में मां-बाप के घर रहती थी, उसी तरह से व्यवस्थित घरेलू जीवन चाहती थी।

ऐसा न होने से उसके ऊंचे दिमाग पर बुरा असर पड़ता था। वह पैसेवाली थी, लेकिन वह बटुए का मुंह कसकर रखती थी और उसने पति की घुड़दौड़ के घोड़े रखने की योजना के लिए पैसे देने से साफ इन्कार कर दिया। जहांतक पति-पत्नी के सम्बन्ध की बात है, उसकी इस हरकत की पति पर यह प्रतिक्रिया हुई कि वह अपनी औरत की उपेक्षा करने लगा। उसकी नादिरशाही और कर्कश आवाज से उसे बहुत ही चिढ़ होती थी। वह उसे चोट नहीं पहुंचाता था, लेकिन उसकी उपेक्षा से पत्नी को बड़ी ही दुखद निराशा होती थी। जब वह उसके पास जाती थी, वह उसकी बातें नरमाई और सहानुभूति से सुनता था, लेकिन ज्योंही वह अपनी बात खत्म करती थी, वह उसकी बातों को सिगरेट के धुएं की तरह उड़ा देता था और उसे जो करना होता था, वही करता था। उसकी दिखाऊ मिठास पत्नी के लिए खुले विरोध से कहीं अधिक कष्टकर थी। चूंकि वह उसकी अचूक भलमनसाहत से परास्त हो जाती थी, उसका दबा हुआ गुस्सा दूसरी दिशाओं में निकलता था और सबसे ज्यादा, कारण-अकारण, उसके शिकार होते थे नौकर। दो बरस के कम समय में उसने अपने घरेलू नौकरों को सोलह बार बदला। एक बार तो उसने मारपिटाई तक कर डाली और उसके लिए मुकद्दमेबाजी और सबके सामने अपनी बदनामी से बचने के लिए उसे भारी कीमत चुकानी पड़ी।

क्रेसेन्ज ही एक ऐसी नौकरानी थी, जो उसके गालीगलौज के तूफान को बिना विचलित हुए सहन कर लेती थी और जब मालकिन गुस्से में लाल-पीली होती थी, वह चुप चाप बारिश में खड़े घोड़े की तरह बिना हिले-डुले खड़ी रहती थी।

क्रेसेन्ज किसीका पक्ष नहीं लेती थी और जल्दी नौकरों के बदलने का भी उसपर कोई असर नहीं होता था। न वह यह

देखती थी कि उसके साथियों के नाम और काम बराबर बदल रहे हैं। इसका कारण यह था कि दिन का समय वह कभी अपने साथियों के बीच नहीं बिताती थी। जोर से दरवाजों के बन्द होने, खाने के समय की मीनमेख और अपनी मालकिन की चीखों के प्रति भी वह उदासीन रहती थी। वह रोज बाजार जाती थी और अपने रसोई के काम में लगी रहती थी। बाहर क्या होता है, इस ओर उसका ध्यान ही नहीं जाता था।

एक के बाद एक करके दिन निकलते गए और बिना उसकी मनोवृत्ति में तनिक भी परिवर्तन लाये राजधानी में उसके जीवन के दो बरस बीत गए। उसमें ऊपरी कोई तबदीली हुई तो यह कि उसकी सन्दूकची में नोटों की गड्डी एक इंच और मोटी हो गई और जब दूसरे साल के अखीर में उसने उन्हें गिना तो पता लगा कि जितना वह चाहती थी यानी एक हजार, उसके करीब-करीब नजदीक पहुंच चुकी है।

लेकिन संयोग और भाग्य की महिमा निराली है। वे सख्त-से-सख्त स्वभाव को भी अक्सर बदल देते हैं। क्रेसेन्ज में कोई परिवर्तन दिखाई दिया तो ठीक वैसे ही, जैसे कि उस जैसे मामूली लोगों में होता है। हर दस बरस के बाद सरकार नए सिरे से मर्दुमशुमारी करती थी। उसके लिए हर घर से एक कागज भरा जाता था। बैरन अच्छी तरह से जानता था कि उसके नौकर लिखना-पढ़ना नहीं जानते, इसलिए उसने मर्दुमशुमारी के कागज की खानापूरी स्वयं करने का फैसला किया और कुछ समय बाद क्रेसेन्ज को अपने लिखने-पढ़ने की मेज के पास बुलाया। जब उसने उसका पूरा नाम, उम्र और जन्मस्थान पूछा तो पहली और तीसरी बात की जानकारी अप्रत्याशित रूप से उसे रोचक लगी। एक शौकीन खिलाड़ी होने के नाते बैरन अक्सर कालिज के दिनों के अपने एक पुराने दोस्त के

यहां जाया करता था, जो तिरोल की शिकारगाह का स्वामी था। एक मरतबा वह सामर का पीछा करते हुए पन्द्रह दिन तक पहाड़ों में घूमता रहा था। उसके साथ फिकनहूबर नाम का एक गाइड था, जो क्रेसेन्ज का चचा निकला। लैंडरशीम को वह ग्रादमी बहुत पसन्द ग्राया।

इस घटना से ग्रौर रसोईदारिन के गांव की जानकारी से मालिक ग्रौर नौकरानी के बीच चर्चा चल पड़ी। उस चर्चा से मालूम हुग्रा कि जिस सराय में क्रेसेन्ज ने पहले काम किया था, उसमें बैरन बहुत ही जायकेदार खाना खा चुका था।

इसमें शक नहीं कि ये मामूली बातें थीं, लेकिन एक के बाद एक ऐसे संयोग निकल ग्राये कि वे मामूली बातें ही उन्हें बहुत ग्रच्छी जान पड़ीं। क्रेसेन्ज को तो ग्रौर भी बढ़िया लगीं, क्योंकि पहली बार वियना में उसे ऐसा ग्रादमी मिला, जो उसके घर से परिचित था।

३/

क्रेसेंज में अनोखा उत्साह भर आया। उसका चेहरा चमक उठा। वह बैरन के सामने खड़ी बेतुके तौर से उसके हंसी-मजाक को सुनती और गुदगुदाते दिल से उसके मजाकों को सहती। मालिक ने तिरोली लहजे में एक दिन पूछा कि क्या वह गाना-वाना जानती है। अन्त में उसने उसकी पीठ को थपथपाया और कहा, "अच्छा, मेरी प्यारी सेन्जी, अब तुम जाओ। मुझे अपना काम करना है। लेकिन यह दो क्राउन और लेती जाओ, क्योंकि तुम जिलरटाल की रहनेवाली हो।"

मालिक ने कोई खास गहरी भावना उसके प्रति नहीं दिखाई थी - ऐसी तो बिल्कुल नहीं, जिससे कि उस जवान नौकरानी का दिल गुदगुदा उठे, लेकिन उसके मन पर उन चन्द मिनटों की बातों का ठीक वैसा ही असर हुआ, जैसाकि किसी चारों ओर से घिरे तालाब में पत्थर फेंकने का होता है। गोल-गोल लहरें उठीं, धीरे-धीरे वे बड़ी होती गयीं और क्रेसेंज की चेतना में दाखिल हो गयीं।

सालों तक उसका अपने सभी साथियों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रहा था और उसके लिए यह अकल्पनीय बात थी कि उस निर्जन एकान्त में रहनेवाले लाखों व्यक्तियों में एक ऐसा व्यक्ति निकल आये, जो उसके पहाड़ों को जानता हो और जिसने उसके हाथ का पका हुआ खाना खाया हो। इसके साथ-साथ उसकी पीठ पर जो थपकी पड़ी थी, उससे उसके अन्दर नारी जाग उठी थी। फिर भी क्रेसेंज में इतना हौसला नहीं हुआ कि वह सोचे कि इतना शानदार पोशाकधारी विशिष्ट

व्यक्ति उसके मुरझाए शरीर की कामना करेगा। जो हो, उसकी सोई हुई इन्द्रियां चेतन हो उठीं।

इस प्रकार इस घटना के फलस्वरूप उस स्त्री के अन्तरंग में एक परिवर्तन आरम्भ हुआ। शुरू में वह परिवर्तन धुंधला-सा था, लेकिन वह लगातार साफ होता गया और अन्त में उससे एक ऐसी नयी भावना पैदा हुई, जिससे प्रेरित होकर उसने असंख्य लोगों में से एक आदमी को चुना और उसे वह आगे से न सिर्फ अपना स्वामी, बल्कि देवता, मानने लगी। पालतू हो जाने पर जैसे श्वान अपने मालिक के पीछे लगा रहता है और अगर कुछ दिनों के लिए वे अलग होते हैं तो बाद में मिलने पर खुशी से पूंछ हिलाने लगता है, गुलाम की तरह उसके हर हुक्म को मानता है, कुछ वैसी ही हालत क्रेसेंज की हो गई। उसके दिमाग के तंग स्थानों में, जो अबतक मुश्किल से आधे दर्जन विचारों, पैसा, बाजार, अंगीठी, गिर्जा और पलंग) से भरे रहे थे, अचानक एक नया अंकुर फूटा। उस अंकुर ने फैलने के लिए जगह चाही और पुरानी चीजों को एक ओर कर दिया। उस देहाती स्त्री के पास जो था और जिसे एक बार पकड़ में आने पर देना उसके लिए असम्भव था, उसी से उसने इस नये अंकुर को अपनी भावनाओं की उलझी हुई दुनिया में पोषण दिया। उसके स्वभाव का यह परिवर्तन कुछ ही समय में पूरी तरह उभर आया। इस परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू में कुछ और तरह की थी, जैसे वह मालिक के कपड़ों और जूतों को तो बड़ी सावधानी से साफ करती थी, पर मालकिन के जूतों और कपड़ों को दूसरी नौकरानी के लिए छोड़ देती थी, फिर जैसे ही मालिक के ताले में चाबी लगाने की आवाज सुनती थी, वह फौरन हाल में दौड़ जाती थी, जिससे उसका टोप, कोट और घड़ी उससे ले ले। रसोई में वह पहले से

ज्यादा मेहनत से काम करती थी और कभी-कभी बाजार में सामर के गोश्त के लिए चक्कर-पर-चक्कर लगाती थी। अब वह अपने कपड़ों को ठीक रखने पर भी ध्यान देने लगी थी।

एक या दो सप्ताह बीते होंगे कि उसकी भावनाओं के अंकुर मे धरती के बाहर पत्ती दिखाई दी। कुछ हफ्ते और निकले कि उसमें से और पत्तियां निकलीं और उनके रंग भी चमक आये। उसकी दूसरी भावना पहली की पूरक थी। पहली भावना थी मालिक के प्रति भक्ति, दूसरी थी मालकिन के प्रति घृणा——उस स्त्री के प्रति, जो कि बैरन के साथ रह सकती थी, सो सकती थी और जब चाहे बात कर सकती थी, लेकिन फिर भी वह अपने पति के प्रति इतनी श्रद्धा नहीं रखती थी, जितनी कि स्वयं क्रेसेंज रखती थी। उसकी घृणा का एक कारण यह भी हो सकता था कि एक मरतबा मालकिन ने बड़ी क्रूरता से अपने पति को जब जली-कटी सुनाई तो उसे बड़ा धक्का लगा। दूसरा कारण शायद यह था कि वह यह जान गयी थी कि उस स्त्री और मालिक के स्वभाव में बड़ा भारी अन्तर है।

कुछ भी हो, क्रेसेन्ज अनेक प्रकार से यह दिखाने लगी कि उसके दिल में मालकिन के लिए वितृष्णा पैदा हो गयी है। मालकिन को कम-से-कम दो बार घंटी बजानी पड़ती थी, तब कहीं क्रेसेंज जवाब देती थी और फिर इतनी धीमी चाल से और इतनी बेमन आती थी कि उससे झुंझलाहट होती थी। मालकिन को उसकी बातों का वह कोई उत्तर ही नहीं देती थी, जिससे मालकिन को कभी इस बात का पता ही नहीं चल पाता था कि वह उसकी बात समझ गयी है या नहीं और वह उसे पूरा करेगी। वह अपनी बात को फिर से दुहराती थी तो क्रेसेंज बड़ी बेरुखी से सिर हिला देती थी या देहाती लहजे

में कह देती थी, "मैंने आपकी बात ठीक तरह सुन ली है।" यह भी होता था कि मालकिन थियेटर जाने के लिए कपड़े पहन रही है, पर उस दराज की चाबी नहीं मिल रही, जिसमें उसके कुछ जेवरात रखे हैं। आधे घंटे तक जोरों की खोज करने पर चाबी कमरे के कोने में पड़ी मिलती थी। क्रेसेंज ने तय कर लिया था कि टेलीफोन पर आये सन्देश मालकिन को देगी ही नहीं और इसके लिए जब उसपर डाट पड़ती थी तो वह ढिठाई से कह देती थी, "मैं भूल गयी।" वह अपनी मालकिन को आंख-से-आंख मिलाकर नहीं देखती थी, क्योंकि उसे डर रहता था कि कहीं उसके मन की तकलीफ बाहर न झलक उठे।

इस दरम्यान इन घरेलू परेशानियों के कारण पति-पत्नी के बीच लगातार जोरों की तनातनी होने लगी, क्योंकि नौकरानी की मनःस्थिति और उसके अभद्र व्यवहार की पत्नी पर इतनी प्रतिक्रिया हुई कि उसका मानसिक असंतुलन बढ़ गया। ब्रिगिटा के तंतुओं पर अधिक समय तक क्वारी रहने के कारण वैसे ही बड़ा जोर पड़ा था, अपने पति की उपेक्षा और नौकरों तक पर अपने मन की न निकाल पाने के कारण वह और ज्यादा असंतुलित हो गयी। अनिद्रा दूर करने के लिए उसने जो दवाइयां खाईं, उससे उसकी हालत और भी बिगड़ गयी। लेकिन किसी ने भी उस बेचारी औरत के साथ उसके उस संकटकाल में हमदर्दी नहीं दिखाई और न किसीने उसके व्यवस्थित रहने तथा अपने ऊपर काबू पा लेनें में मदद करनें की कोशिश की। उसने अपनेको एक मानसोपचारक को दिखाया। उसने कुछ महीने किसी सेनेटोरियम में जाकर रहने की सलाह दी। उसके पति ने इस प्रस्ताव का इतने अविवेक-पूर्ण उत्साह से समर्थन किया कि स्त्री नें पहले तो उस पर

विचार करने से ही इन्कार कर दिया, पर अन्त में वह राजी हो गयी। उसने तय किया कि वह अपनी नौकरानी को साथ में ले जायगी और मालिक की देखभाल करने के लिए क्रेसेंज उस लम्बे-चौड़े मकान में रहेगी।

क्रेसेंज को जैसे ही यह खबर मिली कि उसके प्यारे स्वामी की देखभाल की पूरी जिम्मेदारी उसके ऊपर होगी, उसपर बिजली का-सा असर हुआ। उसे लगा मानो कोई जादू की पुड़िया उसे मिल गयी हो–एक वशीकरण मंत्र और उसने उसकी अतृप्त वासनाओं को उत्तेजित कर दिया और उसके सारे व्यवहार को ही बदल दिया। उसके अंग-प्रत्यंग अब भद्दे और कठोर नहीं रह गए थे। वे हलके, सहज और फुर्तीले हो उठे थे।

जब मालकिन के सफर का समय आया तो नौकरानी ने किसीके कहने की राह देखे बिना एक कमरे से दूसरे में दौड़-कर उसका सामान तैयार किया। बोझ की तरह उसे कंधे पर उठाया और नीचे गाड़ी पर ले गयी।

रात को जब बैरन पत्नी को स्टेशन से विदा करके घर लौटा तो उसने उत्सुक क्रेसेंज को अपना टोप और ओवरकोट दे दिया और लम्बी सांस छोड़ते हुए बोला, "अच्छा हुआ, उस-से आसानी से छुटकारा मिल गया।"

यह एक बड़ी ही विलक्षण घटना थी। क्रेसेंज जड़ पशुओं की तरह थी, यानी कभी हँसती न थी, लेकिन अब उसके होंठ किसी अज्ञात भावना से मुस्करा उठे। उसका मुंह हँसी से इतना खुल गया कि लैंडरशीम को उसके चेहरे की इस अभिव्यक्ति से दुःखद आश्चर्य हुआ। नौकरानी से इतना खुल जाने पर उसे बड़ी लज्जा अनुभव हुई और वह आगे एक भी शब्द कहे बिना अपने सोने के कमरे में चला गया।

मालिक की यह बेचैनी कुछ ही क्षण रही और थोड़े ही दिनों

में मालिक ग्रौर नौकरानी मिलकर एकान्त की सुनहरी भावना में मौज से ग्रानन्द की बंसी बजाने लगे। पत्नी के चले जाने से वायुमण्डल साफ हो गया था। जिम्मेदारियों के बोझ ग्रौर ग्रपनी हलचलों के लिए जवाबदेही के हर घड़ी के हर खतरे से मुक्ति पाने के कारण रुडाल्फ ग्रगले दिन रात को बहुत देर से लौटा। क्रेसेन्ज ने चुपचाप जिस तरह उसका ग्रभिनन्दन किया, उससे उसे बड़ा ग्रानन्द मिला। ब्रिगिटा जिस तरह रूखे सवालों की झड़ी लगाकर उसका स्वागत करती थी, उससे इस स्वागत में कितना ग्रन्तर था।

क्रेसेन्ज ग्रपने काम में ग्रसामान्य उत्साह से जुटी रहती थी। पहले से जल्दी उठती थी। फर्नीचर पर ऐसे पालिश करती थी कि उसमें ग्रपना चेहरा देखा जा सकता था। दरवाजे के हत्थों को चमकाते-चमकाते उसे कभी संतोष नहीं होता था। बढ़िया स्वादिष्ट खाना तैयार करती थी ग्रौर बैरन को यह देखकर ग्रचरज होता था कि वह भोजन उन बर्तनों में परोसती थी, जो विशेष ग्रवसरों के लिए रक्खे गये थे। हालांकि वह ऐसी चीजों की ग्रोर ध्यान नहीं देता था, फिर भी उस विलक्षण नौकरानी की विशेष सावधानी उससे छिपी नहीं रही ग्रौर दिल का भला होने के कारण उसने इसके लिए उसका ग्राभार भी माना। वह उसके भोजन बनाने की कुशलता की प्रशंसा करता था ग्रौर एक-दो दिन में जब उसकी वर्षगांठ ग्रायी ग्रौर क्रेसेन्ज नें मुरब्बा तैयार किया ग्रौर पेस्ट्री बनाकर उसपर उसका नाम लिखा तो उसने मुस्कराकर कहा, "सेन्जी, तुम तो मेरी ग्रादतें बिगाड़ डालोगी। लेकिन भगवान के लिए यह तो बताग्रो कि जब मालकिन घर लौट ग्रावेंगी तो मैं क्या करूंगा!"

दूसरे देश के निवासियों को इस तरह के खुले व्यवहार, मालिक ग्रौर नौकर के बीच की दूरी की कमी, को

देखकर शायद लगे कि ऐसा हो नहीं सकता, लेकिन जहांतक युद्धपूर्व की आस्ट्रिया का सम्बन्ध है, ये मामूली-सी बातें थीं। इनसे पता चलता है कि आम लोगों के मन में आभिजात्य वर्ग के लिए कितनी घृणा थी। उस घृणा में भद्र वर्ग भी रस लेता था। बड़े-से-बड़े लोग मौज उड़ाते थे और इस बात की चिन्ता नहीं करते थे कि बात के फैलने से उनकी बदनामी होगी। इसी तरह शिकार खेलने जानेवाला बड़ा आदमी यूनीवर्सिटी के प्रोफेसर या धनिक उद्योगपति से दोस्ताना व्यवहार करने की अपेक्षा खाने की मेज पर अपने सईस या बन्दूक में बारूद भरने वाले से गपशप करना ज्यादा पसन्द करता था।

लेकिन इस प्रकार के जनतांत्रिक सम्बन्ध को कोई महत्व नहीं देना चाहिए। मालिक फिर भी मालिक ही रहता था और वह जानता था कि खाने की मेज पर से उठने के बाद नौकर से किस तरह फासले पर रह सकता है। हालांकि भद्र लोग रईसों के तौर-तरीकों की नकल करने को हमेशा तैयार रहते थे, बैरन अपनी पत्नी की शान में बट्टा लगानेवाली कोई भी बुरी बात उस देहाती स्त्री से कहने से नहीं चूका, जो उसकी नौकरी में थी। नौकरानी से उसे भरोसा हो गया था कि वह उसे कभी नहीं छोड़ेगी, लेकिन उसने यह नहीं सोचा कि उसके शब्दों का उस औरत के सीधे-सादे मन पर कितना गहरा असर पड़ेगा।

४/

इस सबके होते हुए भी कुछ समय तक उसने अपनी जबान पर और अपने सामान्य व्यवहार पर थोड़ा संयम रखा। फिर इस बात से आश्वस्त होकर कि वह उस औरत पर पूरा भरोसा कर सकता है, उसने बिना आगे की सम्भावनाओं की चिंता किये अपने कुंआरेपन की आदतों को फिर से छूट देना शुरू कर दिया। यह उसका अपना घर था, पत्नी उसकी बाहर थी और वह जैसे चाहे अपना दिलबहलाव कर सकता था। एक सप्ताह तक तो वह एक विधुर की तरह रहा, बाद में एक दिन उसने क्रेसेन्ज को बुलाया और जैसेकि कोई खास बात नहीं थी, उसने उसे बताया कि शाम को वह दो आदमियों का खाना मेज पर लगा दे और बिना उसके लौटने की राह देखे सो जाय। घर आने पर वह सारी व्यवस्था आप कर लेगा।

"बहुत अच्छा।" क्रेसेन्ज ने जवाब दिया। हालांकि वह समझ गयी थी कि इस सबका मतलब क्या है, फिर भी उसने अपने चेहरे पर शिकन तक न आने दी।। लेकिन जब बैरन आधी रात गए आपेरा की एक जवान लड़की के साथ लौटा तो उसको यह देखकर बड़ा आनन्द हुआ कि क्रेसेन्ज में जितनी दिखायी देती थी, उससे अधिक पैनी बुद्धि है। उसने भोजन की मेज पर फूल सजा रखे थे और जब वह अपने सोने के कमरे में गया तो देखता क्या है कि हमेशा की तरह न सिर्फ उसका बिस्तर ही लगाया गया है, बल्कि बराबर का पलंग भी बिछा दिया गया है और उसकी पत्नी का गाउन और सिलीपर पहनने के लिए वहां पर रख दिये गए हैं। रुडाल्फ को, जिसके मन में

शादी के समय ली गयी शपथ का कोई मूल्य न था, यह देख कर हंसी आयी कि वह असाधारण स्त्री किस हद तक सावधानी रख सकती थी।

उस दिन से वह मालिक की पक्की विश्वासपात्र बन गयी और अगले दिन सवेरे अपनी प्रेमिका का काम करने के लिए घंटी बजाकर क्रेसेन्ज को बुलाने में मालिक को हिचक नहीं हुई।

इस अवसर पर क्रेसेन्ज का नया नामकरण किया गया। डोना एलवीरा का अभिनय करने के लिए एक उदीयमान गायिका तैयारी कर रही थी और उसे अच्छा लगा कि वह अपने प्रेमी को 'डान जुआन' कहकर पुकारे। अगले दिन जब वह अपना अभ्यास करने के लिए फ्लैट में आई तो उसने उल्लास से कहा, "डान जुआन, मैं चाहती हूं कि तुम अपनी लेपोरैला को बुलाओ।" यह नाम रुडाल्फ के मन पर चढ़ गया। इसका कारण यह था कि यह नाम उस तिरोली देहातिन पर बिल्कुल लागू नहीं होता था। उस समय से वह बराबर उसे 'लेपोरैला' कह-कर सम्बोधित करने लगा। क्रेसेन्ज पहले तो इस नाम से कुछ डरी, लेकिन बाद में उसने उसे अपने लिए सम्मानसूचक मान लिया। वह ज़रा भी नहीं जानती थी कि उसका संदर्भ क्या है, लेकिन उसके अशिक्षित कानों को यह शब्द मधुर लगता था और यह सोचकर वह पुलक उठती थी कि उसके मालिक ने उसे प्यार का नाम दे दिया है। जब-जब वह लेपोरैला की आवाज सुनती थी, उसके भारी होंठ मुस्करा उठते थे और घोड़े जैसे उसके दांत दीखने लगते थे। वह फौरन अपने मालिक का हुक्म बजाने के लिए दौड़ पड़ती थी।

लेपोरैला नाम मज़ाक में चुना गया था और वह मौज़ूं भी नहीं था, फिर भी उसका असर हुआ, क्योंकि लेपोरैला नाम की स्त्री की तरह यह लेपोरैला भी मालिक की सहानुभूतिपूर्ण

साथिन बन गयी। अधेड़ उम्र की वह स्त्री, जिसे प्यार का अनुभव नहीं हुआ था, अपने वासनामय युवा मालिक की मौजों में साथ देना बड़े गौरव की बात समझने लगी। उसे इस बात से कोई सरोकार न था कि आया उसे खुशी इस अनुभूति से होती है कि उस मालकिन का बिस्तर, जिसे वह घृणा करती थी, हर रात को किसी नयी नाजायज औरत से दूषित होता था या कि इस बात से कि उस कामोत्तेजक आनन्द में मानसिक रूप से वह स्वयं भागीदार होती थी।

सालों तक कठोर परिश्रम करने से उसका शरीर थक गया था और उसमें वासना नाम को भी नहीं बची थी। फिर भी अपनी मालकिन के बिस्तर को एक के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी के द्वारा इस्तेमाल होते देखकर उसे जो हर्ष होता था, उससे वह रोमांचित हो उठती थी। उसकी सुप्त वासनाओं को इस सारे अज्ञात वासनामय वातावरण से बड़ा उत्तेजन मिलता था।

क्रेसेन्ज सचमुच लेपोरैला बन उठी। उसके गुण अन्तर से उभरकर ऊपर आ गये। वह दरवाजे पर कान लगाकर अन्दर की बातें सुनती थी, चाबी के सूराख में से भीतर झांकती थी और इधर-से-उधर उत्सुकतापूर्वक चक्कर लगाती थी। ऐसा वह उस समय तक करती रही जबतक कि उसकी उत्सुकता और सतर्कता उसके हाड़-मांस के शरीर के लिए स्वाभाविक न बन गई। पड़ोसी अचरज में थे कि क्रेसेन्ज बड़ी मिलनसार हो गयी है। नौकरों से वह गपशप करती थी, डाकिए से मजाक करती थी और बाजार में औरतों से इधर-उधर की चर्चाएँ करती थी। इसके बाद एक दिन रात को जबकि नौकरों की कोठरियों की रोशनी गुल हो गयी थी, सामने की नौकरानियों ने उसकी खिड़की से, जो हमेशा शान्त रहती थी, मजेदार

श्रावाज सुनी। आल्प्स के चरागाहों में ग्वालिनें जिस प्रकार का लोकगीत गाया करती हैं, उसी प्रकार का लोकगीत वह गा रही थी। क्रेसेन्ज के होंठ गाने के श्रादी तो थे नहीं। वह उनका इस्तेमाल इस तरह कर रही थी जैसे कोई बालक उपेक्षित पियानों के पर्दों पर उंगलियां फिराता है। उसमें से निकलती श्रावाज एक श्रोर दिल को छूती है तो दूसरी श्रोर तबीयत को खराब भी करती है। बचपन के बाद क्रेसेन्ज ने कभी गाने की कोशिश नहीं की थी, लेकिन भूले-बिसरे सालों के श्रन्धकार में से कुछ उठा श्रौर उसने उजाले की श्रोर जाने के लिए संघर्ष किया।

इस श्रसामान्य परिवर्तन को उस श्रादमी ने नहीं देखा, जिसने उसको जन्म दिया था, क्योंकि श्रपनी ही छाया को देखने का कष्ट कौन उठाता है ? बेशक, हम श्रधखुली श्रांखों से देखते हैं कि हमारी छाया किस तरह हमारा पीछा करती है श्रौर कभी-कभी उस इच्छा की तरह, जिसे हम पूरी तरह नहीं जानते, वह छाया श्रागे-श्रागे भी चलती है, लेकिन कितना कम ध्यान हम दे पाते हैं श्रपनी छाया की प्रतिच्छाया की श्रोर श्रौर कितना कम श्रपने व्यक्तित्व की श्राड़ी-तिरछी रेखाश्रों को पहचान पाते हैं। क्रेसेन्ज में जिस चीज को लेडरशीम देख पाया, वह यह थी कि वह हमेशा चुपचाप मेहनत करके श्रात्म-त्याग द्वारा उसकी सेवा करने को तत्पर रहती थी। उसकी मूक पूजा उसे श्रच्छी लगती थी। वह समय-समय पर, जैसेकि कुत्ते को थपथपाते हैं,एक-दो बार दोस्ताना शब्द कह देता था, कभी-कभी मजाक भी कर उठता था, उसका कान पकड़ लेता था, नोट या थियेटर की टिकट दे देता था। ये मामूली चीजें थीं, जिन्हें वह सहज ही जेब से निकालकर उसके हवाले कर देता था, लेकिन क्रेसेन्ज के लिए ये श्रनमोल निधियां थीं, जिन-को वह मूल्यवान वस्तुश्रों की तरह सहेजकर श्रपनी संदूकची में रखती जाती थी।

५/

धीरे-धीरे लेडरशीम की आदत पड़ गयी कि क्रेसेन्ज की उपस्थिति में अपने मन की बात कह दे और उसे भारी जिम्मेदारी के काम सौंपे। जितना-जितना उसका विश्वास बढ़ता गया, उतनी ही क्रेसेन्ज की भक्ति बढ़ती गई। वह अन्दाज लगाती थी कि उसके स्वामी की इच्छाएं क्या हो सकती हैं। वह उसके अन्तर में उसकी इच्छाओं की पूर्ति करनेवाले के रूप में प्रविष्ट होना चाहती थी। वह उसकी उपलब्धियों को अपनी आंखों से देखना चाहती थी, कानों से सुनना चाहती थी और उसके आमोद-प्रमोद में भागीदार होना चाहती थी। रात को जब उसके साथ कोई नयी साथिन आती थी तो उसका चेहरा चमक उठता था, लेकिन जब वह अकेला लौटता था तो उसके चेहरे पर निराशा झलक उठती थी। उसके हाथ पहले जिस तरह लगातार चला करते थे, उसी तरह अब उसका दिमाग चलने लगा और उसकी आंखों में समझदारी की एक नयी रोशनी जगमगा उठी। बोझा ढोनेवाला थका हुआ पशु अब इन्सान के रूप में विकसित हो गया था। इतना होने पर अब भी वह दूसरों से अलग रहती थी, कम बोलती थी, विचारों में डूबी रहती थी, काम में घिरी और बेचैन रहती थी।

एक दिन बैरन हर रोज से जल्दी घर आ गया तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उसने देखा कि रसोई के दरवाजे के पीछे से, जहां हमेशा खामोशी छायी रहती थी, गाने की आवाज आ रही थी। दरवाजा आधा खुला था। सामने

लेपोरैला खड़ी अपने कपड़ों से हाथ पोंछ रही थी। मालिक को देखकर वह सहम उठी।

"मेरी इस आजादी के लिए मुझे माफ कीजिए।" निगाह नीची हुए किये उसने कहा, "लेकिन पेस्ट्री बनानेवाले रसोइये की लड़की यहां आई हुई है। वह बहुत ही सुन्दर है। वह आप से परिचय पाकर बड़ी खुश होगी।"

लेडरशीम ने क्रेसेन्ज की ओर देखा। उसकी समझ में नहीं आया कि उसकी मूर्खतापूर्ण हरकतों को स्वीकार करे या न करे अथवा कि उस सुखद प्रसंग का लाभ उठाने के लिए नौकरानी का प्रस्ताव मान ले। अन्त में उसकी वासना मचल उठी और उसीकी जीत हुई।

"अच्छा, लाओ उस सुन्दरी को। उसे ज़रा देख लें।" उसने जवाब दिया।

जिसके बारे में लेपोरैला ने आकर्षक कहानियां जोड़कर इतनी तारीफ की थी, वह सुन्दर बालोंवाली सोलह साल की लड़की थी। लजाती हुई वह रसोई से निकलकर आयी और उस फैशनपरस्त आदमी के आगे उसने अपनी सुन्दरता का जाल फैलाया, जिसे वह रास्ते की एक दुकान से देखकर अक्सर सराहा करती थी। उसकी निगाह को देखकर लेडरशीम खुश हुआ और उसने कहा कि मेरे कमरे में आकर मेरे साथ चाय पीओ। लड़की ने मुड़कर देखा। क्रेसेन्ज वहां से गायब हो गई थी और उस उत्तेजित और उत्सुक लड़की को लगा कि सिवा उस निमंत्रण को स्वीकार करने के और कोई चारा नहीं है।

"अच्छा, मेरे कमरे में आओगी?"

लेकिन प्रकृति उछल-कूदकर आगे नहीं बढ़ती। हालांकि आवेग के वशीभूत होकर क्रेसेन्ज में कुछ हद तक नयी चेतना पैदा हो गयी थी, किन्तु वह विचार की बड़ी सीमित प्रक्रिया

थी और उससे क्रेसेन्ज बहुत आगे तक नहीं देख सकती थी। वह उन जड़ जानवरों की तरह, जिनकी क्रियाएं अदूरदर्शी भावनाओं से चालित होती हैं, कल्पनाशून्य बनी रही। उसकी बस एक ही इच्छा थी और वह यह कि अपने उस स्वामी की सेवा करे, जिसे वह कुत्ते की जैसी स्वामिभक्ति से प्रेम करती थी।

इस सारे चक्कर में वह बैरन की अनुपस्थित पत्नी को एकदम भूल गयी। इसलिए एक दिन सुबह जब बैरन संजीदा होकर हाथ में एक चिट्ठी लिये रसोई में दाखिल हुआ और उससे बोला कि दिन में घर की सफाई कर डालो, क्योंकि अगले दिन दोपहर बाद उसकी पत्नी सेनेटोरियम से लौट आवेगी, तो उसपर जैसे वज्रपात हुआ। इस खबर से वह स्तब्ध, मुंह बाये, खड़ी रही। उसकी हालत उस आदमी की तरह भयावह हो उठी, जिसके छुरा भोंक दिया गया हो। उसने चुपचाप अपने मालिक की ओर देखा और उस समय तक देखती रही जबतक कि मालिक ने उसे सुस्थिर हो जाने के लिए न कहा। वह बोला, "सेन्जी, तुम बहुत खुश नहीं दीखतीं, लेकिन इस मामले में हम कर भी क्या सकते हैं ?"

इसपर क्रेसेन्ज के रूखे चेहरे पर कुछ रेखाएं उभर आयीं मानों उसके अन्तर की गहराई में कुछ हलचल हो रही हो। अन्दर से एक लहर उठती दिखायी दी और उसके पीले गालों पर गहरी लालिमा दौड़ गयी। बड़ी कठिनाई से उसका मुंह खुला और उसने कहा, "आखिर...कोई...सचमुच..."

उसका गला रुंध गया और वह वाक्यों को पूरा नहीं कर पायी। मारे द्वेष के उसका चेहरा विकृत हो उठा और उसका भाव कुछ इतना विषाक्त हो गया कि लेडरशीम एकबारगी कांप उठा और चौकन्ना होकर ठिठका रह गया।

लेकिन क्रेसेन्ज अपने काम में लग गई। वह तांबे की पतीली को इतने जोर-शोर से रगड़ने लगी, मानो अपनी उंगलियों की खाल को उधेड़ डालेगी।

मालकिन लौट आई। उसकी अनुपस्थिति में आनन्द की जो भावना हिलोरें ले रही थी, वह काफूर हो गई। फिर वही दरवाजों को पीटना और अकारण उल्टी-सीधी सुनाना शुरू हो गया। इसका कारण शायद यह रहा हो कि उसके कुछ पड़ो-सियों ने गुमनाम चिट्ठियां भेजकर उसे बताया था कि उसके पीछे उसका पति मौज उड़ाता रहा था। यह भी हो सकता है कि मालिक के स्वागत में इतनी आत्मीयता न रही हो, जो उसकी भावनाओं को शक्तिशाली ढंग से प्रकट करती। जो हो, दो महीने के इलाज के बाद स्त्री की हालत पहले से ज्यादा बुरी दिखायी देती थी, क्योंकि कभी-कभी वह एक साथ रो पड़ती थी, कभी-कभी धमकियां देती थी और कभी बुरी तरह चीख उठती थी।

दिन-ब-दिन पति-पत्नी के बीच के सम्बन्ध असह्य होते गये। अपनी भलमनसाहत की आदत के कारण कुछ हफ्ते तक पति उस तूफान का मुकाबला करता रहा और पत्नी की बातों को उड़ाता तथा उसे ढांढ़स बंधाता रहा। पत्नी धमकी देती रही कि वह तलाक के लिए अदालत में चली जायगी या अपने मां-बाप को लिख देगी, लेकिन पति के उपेक्षापूर्ण व्यवहार का उसप" बड़ा बुरा असर पड़ा। वह ऐसा विश्वास करने लगी कि चारों ओर से गुप्त शत्रुओं से घिरी है और अपनी घबराहट-भरी उत्तेजना से पागलपन की हद तक पहुंच गयी।

क्रेसेन्ज ने खामोशी का अपना पुराना कवच धारण कर लिया, लेकिन अब यह खामोशी बड़ी ही आक्रामक और खतर-नाक बन उठी। जिस समय उसकी मालकिन बाहर से लौटी,

वह रसोई में बैठी रही। स्वागत करने के लिए बुलाया गया, तब भी नहीं आयी। कंधे उठाये काठ की मूर्ति की तरह खड़ी रही। मालकिन के सवालों के उसने इस बेरुखाई से जवाब दिये कि असहिष्णु मालकिन ने आगे उससे कुछ नहीं पूछा और चली गई। क्रेसेन्ज उसकी ओर द्वेष और घृणा से देखती रही। अपनी ईर्ष्या के कारण उसने अनुभव किया कि मालकिन के लौट आने से उसके हाथ से घर छिन गया है, सेवा के आनन्द से वह वंचित कर दी गई है, रसोई में मेहनत से अपनी कमर तोड़ने के लिए फिर वहीं पटक दी गई है और 'लेपोरैला' का उसका प्यारा नाम उससे चुरा लिया गया है।

अपनी पत्नी की उपस्थिति में बैरन इस बात की सावधानी रखता था कि क्रेसेन्ज के प्रति किसी प्रकार की सहानुभूति न दिखाए, फिर भी जब-तब स्त्री के क्लेश से थककर वह चैन की सांस लेने की इच्छा से चुपचाप रसोई में चला जाता था और लकड़ी की तिपाई पर बैठकर निःश्वास छोड़ते हुए कहता था, "मैं अब और ज्यादा बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

जिन क्षणों में मालिक क्रेसेन्ज की सहानुभूति में शरण लेता था, वे क्षण लेपोरैला को बड़े आनन्ददायक प्रतीत होते थे। वह कभी जवाब देने या ढाढ़स बंधाने की हिम्मत नहीं करती थी, बल्कि अपने उस देवता को करुणा की निगाह से देखते हुए खामोश रहती थी। इस खामोश हमदर्दी से मालिक को कुछ समय तक राहत मिलती, लेकिन ज्योंही वह रसोई से बाहर आता, उसकी चिन्ताएं बड़ी तेजी से लौट आतीं। क्रेसेन्ज बेबसीभरे गुस्से से हाथ मलती या अपने गुस्से को निकालने के लिए जोर-जोर से बर्तनों की सफाई करती।

६/

आखिर मालकिन के लौट आने से जो नीरस वायुमण्डल पैदा हुआ था, वह भयंकर तूफान के रूप में फूट पड़ा। एक दिन लड़ाई-झगड़े में बैरन का धीरज छूट गया और अपनी भद्रता के सामान्य स्वभाव को छोड़कर वह कमरे से बाहर आ गया और उसने इतने जोर से दरवाजे को पीटा कि मकान की सारी खिड़कियां खड़खड़ा उठीं। उसने चीखकर कहा, "मैं तो इस तरह की जिन्दगी से बाज़ आ गया हूं।"

गुस्से से उसका चेहरा नीला पड़ गया। वह सपाटे से रसोईघर में गया और कांपती क्रेसेन्ज से बोला, "मेरा सामान फौरन बांधो और मेरी बन्दूक नीचे से ले आओ। मैं एक हफ्ते के लिए शिकार पर जाऊंगा। ऐसी कालकोठरी में तो शैतान भी नहीं रह सकता।"

क्रेसेन्ज ने उसकी ओर देखा। उसकी आंखें उत्साह से चमक रही थीं। वह एक बार फिर मालिक के असली रूप में दिखायी दिया। उसने अपनी बात ऊंची रक्खी। सूखी हँसी हँसते हुए वह बोली, "बहुत अच्छा, मालिक। वक्त आ गया है कि इस सबका खात्मा हो।"

उत्तेजना से कांपते हुए वह एक कमरे से दूसरे कमरे में गयी और उन चीजों को इकट्ठा किया, जिनकी मालिक को शिकार में जरूरत हो सकती थी। वह बक्स और बन्दूक को गाड़ी पर रखने ले गयी, लेकिन जैसे ही मालिक उसे धन्यवाद का एक शब्द कहने को हुआ, उसकी हालत को देखकर

वह कांप उठा। उसके बन्द रहनेवाले होठ विषैली मुस्कान से खुले थे। उसकी ऐसी हालत देखकर वह हमेशा चौंक उठता था। उसे याद आता था कि यह अवस्था उस शिकारी जानवर की तरह है, जो झपटने के लिए तत्पर होता है। लेकिन ज्योंही गाड़ी चली, क्रेसेन्ज ने आत्मीयता-जन्य शिष्टाचार से कहा, "मालिक, बाहर अपना समय आनन्द से बिताना। मैं हर चीज की देखभाल रक्खूंगी।"

दूसरे दिन बैरन को तार मिला—"फौरन घर लौट आना आवश्यक।"

इस तार को पाकर वह वापस आ गया। जिस चचेरे भाई ने यह तार दिया था, वह स्टेशन पर मिला। अर्नेस्ट के चेहरे को देखकर रुडाल्फ को पता लगा कि कोई भयंकर बात हो गयी है। बड़ी कोशिश करने के बाद भाई ने रुडाल्फ को बताया कि उसकी पत्नी उस दिन सवेरे अपने बिस्तर पर मरी हुई मिली है। सारा कमरा गैस से भरा था। यह दुर्घटना तो हो नहीं सकती थी। मौत जान-बूझकर बुलायी गयी होगी, क्योंकि गैस-हीटर गर्मियों-भर इस्तेमाल नहीं हुआ था और मौसम अब भी गर्म था। इसके अलावा रात-भर में उस स्त्री ने एक दर्जन या उससे भी ज्यादा सोने की गोलियां खा ली थीं। साथ ही क्रेसेन्ज ने, जो कि मालकिन के साथ अकेली घर में थी, बताया कि उसने मालकिन के ड्रेसिंग रूम में जाने की आवाज सुनी थी, शायद इसलिए कि वह गैसस्टोव को, जो कि सुरक्षा की दृष्टि से सोने के कमरे न रख कर वहां रखा गया था, चालू करने गयी थी। इन सारी घटनाओं को ध्यान में रखते हुए पुलिस के सर्जन ने मौत को आत्मघात प्रमाणित किया।

बैरन के हाथ कांपने लगे। जब उसके भाई ने क्रेसेन्ज की रिपोर्ट का उल्लेख किया तो उसके दिमाग में एक दुखद विचार

उठा और उसका खून जम गया, लेकिन उसने उस व्यथित करनेवाले विचार को दबा लिया और चुपचाप भाई के साथ घर आ गया। लाश पहले ही हटाई जा चुकी थी। उसके सम्बन्धी इस घटना से शंकाशील होकर ड्राइंग रूम में उसकी राह देख रहे थे। उनकी समवेदना में अपनापन नहीं था। उसपर मानो आरोप लगाते हुए उन्होंने अनुभव किया कि रुडाल्फ को यह सूचित करना उनका कर्तव्य है कि इस मामले के दबने की कोई सम्भावना नहीं है, क्योंकि सवेरे ही नौकरानी ने जीने पर जाकर चीखते हुए कह दिया था, 'मालकिन ने आत्म-हत्या कर ली है।' उन्होंने चुपचाप उसके क्रिया-कर्म की व्यवस्था जरूर कर दी है, लेकिन समाज के लोग बुरी-बुरी बातें कर रहे हैं।

रुडाल्फ ने अस्त-व्यस्त मन से उनकी बातें सुनीं और अपनी आंखें अनिच्छापूर्वक उस दरवाजे की ओर उठाईं, जो कि बैठक से सोने के कमरे में जाता था और फिर उसने फौरन फर्श की ओर देखा। उसके दिमाग में जो विचार उठा था, उसके बारे में वह पूरी तरह सोचना चाहता था, लेकिन रिश्तेदारों की बेकार और शंकाशील बात से उसका सोचना असम्भव हो उठा। आधे घंटे तक उसके रिश्तेदार वहां रहे और कहनी-अनकहनी कहते रहे। फिर एक-एक करके वे विदा हो गये। रुडाल्फ उस अंधेरे कमरे में अकेला रह गया। अप्रत्याशित चोट से उसे बड़ी पीड़ा हो रही थी और उसका सिर और थका हुआ शरीर दर्द कर रहा था। वह खड़ा रहा। बैठने का उसे ध्यान ही नहीं आया।

तभी किसीने दरवाजा खटखटाया।

"अन्दर आओ।" उसने जोर से कहा।

दरवाजा खुला और उसने हिचकते और लड़खड़ाते पैरों की आवाज सुनी। वह आवाज उसकी पहचानी हुई थी। वह

कांप उठा। उसे लगा, उसका गला घुट रहा है। उसने मुड़ने की कोशिश की, लेकिन उसके शरीर ने उसका साथ नहीं दिया। इस तरह वह कमरे के बीच में कांपता हुआ खामोश हाथों को जकड़े खड़ा रहा। वह पूरी तरह से जानता था कि उसकी यह कुसूरवार खामोशी कितनी घृणित थी। उसके बाद पीछे से बड़ी रुखाई और उदासीनता से पूछा गया :

"मैं सिर्फ यह जानने आई हूं कि मालिक घर खाना खायंगे या बाहर ?"

मालिक बड़े जोर से थरथरा उठा और उसका दिल मानो बैठ गया। उसने तीन बार कोशिश की, तब कहीं जवाब दे पाया।

"धन्यवाद, मुझे खाने को कुछ भी नहीं चाहिए।"

हिम्मत करके वह पीछे देखता कि उससे पहले ही वे कदम वापस चले गये। अब उसकी जड़ता कम हुई। वह पेड़ की पत्ती की तरह कांपने लगा, लेकिन फिर भी उसमें इतनी ताकत बची थी कि वह उछला और दरवाजे को अन्दर से बन्द कर लिया। उसने सोचा कि अब वह उन घृणित पैरों को फिर से अन्दर नहीं आने देगा। वह सोफे पर जा पड़ा और उस कष्टदायक विचार को समाप्त करने की कोशिश करने लगा, जो उसके अनिच्छुक दिमाग में घुस आया था। यह एक ऐसी चीज़ थी, जिसने सारी रात उसकी पलक नहीं झपने दी और दिन निकल आने तक भी उसका पीछा नहीं छोड़ा—उस समय भी नहीं, जबकि रिवाज के अनुसार काला सूट पहनकर वह मृत स्त्री के ताबूत के पास मातम मनानेवाले प्रमुख व्यक्ति के रूप में खड़ा था।

ज्योंही क्रिया-कर्म की रस्में खतम हुईं, वह राजधानी से भाग गया। जिस तरह उसके मित्र और सम्बन्धी उसकी ओर

देखते थे, वह बर्दाश्त नहीं कर पाता था। उसमें उसे दुर्व्य-वहार की झलक दिखायी देती थी। कह सकते हैं कि उसकी कल्पना कुछ ऐसा ही अनुमान करती थी। बात ठीक हो या न हो, वह उसके लिए सहायक नहीं थी, यहांतक कि जड़ वस्तुएं तक उस पर अभियोग लगाती जान पड़ती थीं। घर के फर्नीचर की हर चीज, विशेषकर सोने के कमरे की, उसे दुखदायी लगती थी। लेकिन सबसे ज्यादा मुसीबत उसे उस व्यक्ति के कारण होती थी, जिसपर उसने किसी समय बड़ा विश्वास किया था और जो उस खाली घर में अपना काम इस तरह कर रही थी, जैसे कोई खास बात हुई ही न हो। जिस घड़ी स्टेशन पर उसके भाई ने उसके नाम का उल्लेख किया था तब से क्रेसेन्ज से मिलने में वह बहुत ही डरता था। जब-जब वह उसके पैरों की आहट सुनता था तब-तब भाग जाने की अपनी भावना को रोकना उसके लिए मुश्किल हो जाता था। उसकी कल्पना मात्र से उसे मतली आती थी। उसकी कर्कश आवाज, तेल से भरे उसके बाल और उसकी नीरस निर्दयता, और बैरन में इतनी ताकत नहीं रही थी कि वह उस औरत और उसका गला दबानेवाली उसकी उंगलियों से छुटकारा पा सके। इसपर उसे झुंझलाहट होती थी। उसके लिए एक ही रास्ता बचा था कि वह वहां से भाग जाय। उसने चुपचाप अपना सामान ठीक किया और बिना क्रेसेन्ज से एक शब्द कहे घर से निकल गया। एक पर्चा इस आशय का छोड़ गया कि वह कैरिथिया में अपने दोस्तों के साथ रहने जा रहा है।

गर्मियां बीतने तक वह वापस नहीं आया। बीच में एक बार अपनी पत्नी की जायदाद से सम्बन्धित मामलों के सिल-सिले में जरूरी होने पर वह थोड़ी देर के लिए आया। तब

वह होटल में ठहरा, इसलिए कि घर में रहनेवाली उस अप-शकुनी औरत की निगाह से अपनेको बचा सके।

क्रेसेन्ज फिर अपने तक ही सीमित हो गई। उसे इतना तक भी पता नहीं था कि मालिक वियना गये हैं। उल्लू की तरह बेकार और दुखी वह अपना सारा समय रसोईघर में बिताती थी, लेकिन पहले वह सिर्फ एक बार प्रार्थना के लिए गिर्जा जाती थी, अब दो बार जाने लगी। मालिक का अहल-कार उसे पैसे दे देता था और हिसाब जांच लेता था। अपने मालिक के बारे में उसे एक शब्द भी सुनाई नहीं पड़ा, क्योंकि उसने न तो कोई चिट्ठी लिखी थी, न कोई संदेश भेजा था।

खामोशी से इन्तजारी के इस अरसे में उसका चेहरा कठोर और दुबला हो गया और उसके अवयव भी पहले जैसे जड़ हो गये। इस प्रकार उस सख्त नफरत की अजीब हालत में उसके महीनों गुजर गये। बैरन को बहुत जरूरी काम से पतझड़ के दिनों में घर वापस आना पड़ा। वह दहलीज पर ठिठका खड़ा रह गया। हफ्तों तक दोस्तों के बीच रहने के कारण वह बहुत-सी बातें भूल गया था, लेकिन अब वह स्थूल आंखों से उस औरत को एक बार फिर देखनेवाला था, जो कभी उसकी साथिन रही थी। इस बात से वह इतना उद्वेलित हो उठा कि उसका जी बिगड़ने लगा, जैसाकि उसकी पत्नी की मौत के तीसरे दिन हुआ था, एक-एक करके जब वह सीढ़ियां चढ़ने लगा तो उसे ऐसा लगा मानो कोई अदृश्य हाथ उसका गला पकड़ रहा है। उसकी रफ्तार धीमी हो गई और उसे ताले में चाबी डालने के लिए अपनेको सुस्थिर करने में काफी जोर लगाना पड़ा।

आवाज सुनते ही क्रेसेन्ज आश्चर्यचकित होकर रसोई से बाहर झपटी। जब उसने अपने मालिक को देखा तो वह पीली

पड़ गई और फिर जैसे वह उसका अभिवादन करती हो, उसने उस बैग को उठा लिया, जो मालिक ने रास्ते में रख दिया था। स्वागत का एक शब्द भी कहने का उसे ध्यान न रहा। बैरन भी उतना ही खो गया था, उसके होठों से भी अभिवादन का एक शब्द न निकला। क्रेसेन्ज चुपचाप बैग को उसके सोने के कमरे में ले गई। बैरन खामोशी के साथ उसके पीछे-पीछे गया। खिड़की से बाहर झांकते हुए वह चुपचाप इस बात की राह देखता रहा कि वह कमरे से चली जाय। उसके जाने पर उसने झट किवाड़ें बन्द कर लीं।

लम्बी अनुपस्थिति के बाद बस यही था अभिनंदन और अभिवादन। क्रेसेन्ज प्रतीक्षा करती रही। बैरन भी इस आशा में रहा कि क्रेसेन्ज को देखते ही उसके मन में जो डर पैदा होता था, वह आगे चलकर दूर हो जायगा, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। क्रेसेन्ज को देखने से पहले जैसे ही वह दरवाजे के बाहर उसके पैरों की आवाज सुनता, उसे चक्कर आने लगता, उसका जी मिचलाने लगता। क्रेसेन्ज उसके लिए जो नाश्ता तैयार करती थी, उसका एक निवाला भी वह नहीं खा पाता था। कपड़े पहनकर वह सवेरे ही घर से निकल जाता और रात गए तक लौटने का नाम न लेता। इसमें उसका एक ही उद्देश्य होता था यानी क्रेसेन्ज की झलक से बचना। वह उसके पैरों की आवाज भी अपने कानों में नहीं पड़ने देना चाहता था, थोड़ी-बहुत जो भी बातें उसे कहनी होती थीं, बिना उसकी ओर देखे वह कह देता था। जिस हवा में क्रेसेन्ज सांस लेती थी, उसमें उसके प्राण सूखते थे।

जहांतक क्रेसेन्ज का सवाल था, वह अपने दिन रसोई में चुपचाप स्टूल पर बैठे बिताती थी। वह अपने लिए खाना नहीं

बनाती थी, उसे भूख ही नहीं लगती थी, किसीसे एक शब्द तक नहीं बोलती थी। सहमी हुई मालिक की सीटी की राह देखती रहती थी, उस पिटे कुत्ते की तरह, जो जानता था कि उसने गलती की है। सच यह है कि वह इतनी मूर्ख थी कि अपने कसूर का अंदाज ही नहीं कर सकती थी। वह तो बस इतना जानती थी कि उसके मालिक, उसके देवता, ने अपनी आंखें उसपर से हटाली हैं और उसकी नाराजगी उसे दुख देनेवाली थी।

७/

बैरन के लौटने के तीन दिन बाद दरवाजे की घंटी बजी। हाथ में बैग लिये एक आदमी नीचे खड़ा था। बाल उसके सफेद थे, प्रकृति शान्त और चेहरा साफ-सफाचट। क्रेसेन्ज ने उसे जाने का इशारा किया, लेकिन आगन्तुक ने बताया कि वह नौकर है और मालिक ने उसे दस बजे आने को कहा था। यह भी कहा था कि उसके आने पर तुम उन्हें खबर कर दो। क्रेसेन्ज को काटो तो खून नहीं। क्षणभर वह हाथ उठाये और उंगलियां फैलाये बुत की तरह खड़ी रही, फिर उसका हाथ उड़ती चिड़िया की तरह नीचे आ गया।

"जाओ, खुद ही अपने आने की खबर दे दो।" क्रेसेन्ज ने गुस्से में भरकर उस अवाक खड़े नौकर से कहा। कहकर मुड़ी और रसोई में जाकर उसने दरवाजा बन्द कर लिया।

नौकर को काम मिल गया। उसके बाद रुडाल्फ के लिए जरूरी नहीं रह गया कि वह क्रेसेन्ज से सीधी बात करे। उसे जो कुछ कहना होता था, वह उस शान्त प्रकृति के आदमी के द्वारा कहलवा देता था। वह आदमी उम्र में बड़ा था और सम्भ्रांत परिवारों में काम कर चुका था। क्रेसेन्ज को अब इसका पता भी नहीं चलता था कि रसोई के बाहर घर में क्या हो रहा है। वहां के जीवन की धारा उसके सिर पर इस तरह बहने लगी, जैसे गहरा पानी किसी पत्थर के ऊपर बहता है।

एक पखवाड़े तक यह दुखदायी स्थिति चलती रही। इसका क्रेसेन्ज पर क्षय रोग की तरह असर पड़ा। उसका चेहरा गिर गया और कनपटी पर उसके बाल सफेद हो गये। उसकी हल-

चलें पहले यदि काष्ठवत थीं तो अब पाषाणवत हो गईं। मूर्ति की तरह वह निश्चल बैठी खिड़की के बाहर शून्य दृष्टि से देखती रहती, लेकिन जब उसके हाथ में करने को काम होता तो बड़े गुस्से और आवेश में करती।

एक पखवाड़ा बीतने पर एक दिन सवेरे वह नौकर मालिक के कमरे में बिना बुलाए आया और बड़े आदर से इस तरह खड़ा रहा मानो उसे कुछ कहना हो। एक बार पहले भी वह उस तिरोली औरत के दुर्व्यवहार की शिकायत कर चुका था और उसे छुट्टी दिये जाने की सलाह दे चुका था। उस समय मालिक ने क्रेसेन्ज के लिए खेद प्रकट करते हुए उसके सुझाव को मानने से इन्कार कर दिया था। नौकर ने अपनी बात पर जोर देने की तब आगे हिम्मत नहीं की थी, लेकिन इस मरतबा उसने अपनी शिकायत बहुत जोरों से की। जब रुडाल्फ ने कहा कि क्रेसेन्ज बहुत दिनों से है और उसे निकालने के लिए उसे पर्याप्त कारण नहीं दिखायी देता तो उस नौकर ने मालिक के इन्कार को स्वीकार कर लेने के बजाय परेशान होकर उसकी ओर देखा और अपने अनुरोध को फिर से दुहराया। बड़े संकोच के साथ उसने कहा, "मालिक, आप सोचेंगे कि मैं मूर्ख हूं, लेकिन सचाई यह है कि मुझे उस औरत से डर लगता है। वह बड़ी खूंख्वार और जहरीली है। आपको पता नहीं कि आपके घर में कितना खतरनाक प्राणी है।"

लेडरशीम को इसपर भरोसा नहीं हुआ। फिर भी वह सहम उठा। उसे जो खबर दी गई थी, वह बहुत ही अस्पष्ट थी।

"एण्टन," उसने कहा, "अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारी बात पूरी करूं तो तुम अपनी बात साफ-साफ कहो।"

"मालिक, मैं कुछ कह नहीं सकता। मुझे लगता है कि

क्रेसेन्ज जंगली जानवर की तरह है, उस जानवर की तरह जो पूरी तरह पालतू न हुआ हो। वह किसी भी घड़ी मेरे साथ या मालिक, आपके साथ दगा कर सकती है। कल जब मैं आपके हुक्म उसे दे रहा था, उसने मेरी तरफ देखा।...उसका देखना मामूली देखना नहीं था...उसने मेरे ऊपर आंखें गड़ा दीं, मानो उछलकर अपने दांत गले में धंसा देगी। मालिक, मुझे सचमुच उसका पकाया खाना खाने में डर लगता है। किसी भी दिन वह मुझे या आपको जहर दे सकती है। आप नहीं जानते, वह कितनी खतरनाक है। यह नहीं कि वह कुछ कहती है। कहती तो कुछ भी नहीं है, लेकिन मुझे पक्का भरोसा है कि वह खून करने के लिए पूरी तरह आमादा हो गयी है।"

रुडाल्फ ने भौंचक्के होकर आरोपकर्त्ता की ओर देखा। क्या उस आदमी ने कहीं कोई चर्चा सुनी है? क्या उसके मन में कोई शक बैठ गया है? रुडाल्फ ने देखा कि उसकी उंगलियां कांप रही हैं। उसने अपना सिगार राखदानी पर रख दिया, जिससे कि उसकी घबराहट किसीको मालूम न हो, लेकिन एण्टन का चेहरा शांत था। बैरन हिचकिचाया। नौकर की सलाह ने उसपर असर डाला। हां, वह क्रेसेन्ज को निकाल बाहर करेगा।

"मैं इस मामले को बढ़ावा नहीं देना चाहता," उसने कहा, "तुम शायद ठीक कहते हो, लेकिन थोड़ा ठहरो। अगर वह आगे फिर तुम्हारे साथ गुस्ताखी करे तो मुझसे बिना पूछे तुम उसे नोटिस दे सकते हो और उससे कह सकते हो कि ऐसा तुम मेरे हुक्म से कर रहे हो।"

"बहुत अच्छा, मालिक।" एण्टन ने जवाब दिया। बैरन चैन की सांस लेता हुआ बाहर चला गया। पर जब-जब उसे कोई भी बात उस औरत की याद आती थी तो उसका दिन

खराब हो जाता था। उसने सोचा कि अगर क्रेसेन्ज उसकी अनुपस्थिति में—बड़े दिन पर—घर से निकाल दी जाती है तो बहुत अच्छा होगा। इस विचार से उसे बड़ी राहत मिली। बेशक, बड़ा दिन सबसे उपयुक्त होगा। वह उन दिनों अपने दोस्तों के बीच रहने के लिए जा रहा था।

अगले दिन सवेरे नाश्ता करने के बाद जैसे ही वह अपने पढ़ने के कमरे में गया कि दरवाजे पर उसे थपकी सुनाई दी। बिना सोचे उसने अखबार पर से निगाह उठाई और कहा, "अन्दर आ जाओ।"

इसपर जो कदम उसे दुःख देते थे और जिसकी आकृति सपने में भी उसे हैरान करती थी, वह औरत अंदर आई। उसकी बदली हालत को देखकर मालिक भौंचक्का रह गया। उसका चेहरा ऐसा मालूम होता था, मानो काली पोशाक के ऊपर मौत का चेहरा हो। बैरन की घृणा करुणा में बदल गई, जब उसने देखा कि वह पददलित स्त्री कालीन के छोर पर रुक गई और पास आने की उसे हिम्मत नहीं हुई। अपनी भावना को छिपाते हुए बड़ी बेरुखी से उसने कहा, "क्रेसेन्ज, क्या बात है ?"

उसकी आवाज में आत्मीयता की जगह आवेग और क्रोध मालूम होता था।

क्रेसेन्ज ने हरकत नहीं की, बल्कि कालीन की ओर दुःख-भरी निगाह से देखती रही। लम्बी खामोशी के बाद उसने कहा, "एण्टन...एण्टन...कहता है कि मालिक ने तुम्हें नोटिस दे दिया है..."

इससे रुडाल्फ को चोट लगी। वह उठ खड़ा हुआ। उसकी कभी भी यह इच्छा नहीं थी कि मामला इतनी तेजी से आगे बढ़ जाय। रुक-रुककर उसने समझाया कि एण्टन ने इस मामले

को तूल दे दिया है। अगर वह उसके साथ ज़रा-सा अच्छा व्यवहार करने लगे तो सबकुछ ठीक हो जायगा, नौकरों को एक-दूसरे के साथ अच्छा सलूक करना चाहिए, आदि-आदि।

क्रेसेन्ज ने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उसकी आंखें कालीन में घुसी जा रही थीं। उसके कंधे उठे हुए थे और उसका सिर बेचैनी से झुका हुआ था। वह एक शब्द की प्रतीक्षा कर रही थी, पर वह शब्द मालिक के मुंह से नहीं निकला। आखिरकार एक घरेलू कर्मचारी के प्रति झुकने की बात से त्रस्त होकर मालिक ने अपनी वाणी के प्रवाह को रोका, लेकिन क्रेसेन्ज ने कोई जवाब नहीं दिया और विद्रोह-भरा मौन धारण किये रही।

दो-तीन मिनट के अन्तराल के बाद क्रेसेन्ज ने कहा, "मैं जो जानना चाहती हूं, वह यह है कि क्या आपने खुद एण्टन से मुझे नोटिस देने के लिए कहा है ?"

बड़े ही आवेग और वेदना से उसने ये शब्द कहे। क्या इसमें कोई धमकी थी ? चुनौती थी ? बैरन की कायरता और सहानुभूति काफूर हो गयी। उस औरत के लिए हफ्तों और महीनों से जो नफरत इकट्ठी हो रही थी, वह आखिर फूट पड़ी और बह चली ! उसकी इच्छा आखिरी फैसला कर देने की थी। अपनी आवाज को थोड़ा बदलकर उसने जवाब दिया, "हां, क्रेसेन्ज, यह बात सच है। मुसीबत से बचने के लिए मैंने एण्टन को घर की जिम्मेदारी सौंप दी है। अगर उसने तुम्हें नोटिस दिया है तो तुम्हें चले जाना चाहिए। अगर तुम उसके साथ अच्छा बर्ताव कर सको तो बात दूसरी है। तब मैं तुम्हारे बारे में उससे कह दूंगा कि वह तुम्हारी पिछली गुस्ताखियों को माफ कर दे। अगर ऐसा नहीं है तो तुम्हें जाना ही होगा और जितनी जल्दी चली जाओ, उतना अच्छा है।"

क्रेसेन्ज ने जो कुछ कहा था, उसमें धमकी देने की भावना थी तो उसे उसकी सजा मिलनी ही चाहिए। इस बदतमीजी को वह बर्दाश्त नहीं कर सकता।

लेकिन कालीन पर से क्रेसेन्ज ने निगाह उठाई तो उसमें किसी तरह की धमकी नहीं थी। उसकी निगाह तो इस तरह थी, जैसे शिकारी से बचने के लिए कोई जानवर झाड़ी में पनाह खोजने को हो और उस झाड़ी में से ही शिकारी निकल पड़े।

"धन्यवाद, मालिक, धन्यवाद!" उसने रुंधी आवाज में कहा, "मैं अभी यहां से चली जाऊंगी। मैं आपके लिए मुसीबत नहीं बनूंगी।"

वह धीरे-से मुड़ी और कमरे के बाहर हो गई।

× × ×

उसी दिन रात को जबकि बैरन आपेरा से लौटकर दोपहरी में आई चिट्ठियों को देखने के लिए अपने कमरे में गया तो देखता क्या है कि मेज पर कोई अनजानी चीज रक्खी है—एक लम्बा बक्स, जिसपर देहाती काम हो रहा था। बक्स में ताला नहीं था। बड़े करीने से सजी वे छोटी-मोटी चीजें उसमें थीं, जो क्रेसेन्ज को बैरन से मिली थीं। उनमें कुछ पोस्टकार्ड भी थे, जो मालिक ने शिकार के लिए बाहर जाने पर भेजे थे, दो थियेटर की टिकटें थीं, एक चांदी की अंगूठी थी। इनके अलावा नोटों की एक गड्डी थी (उसकी सारी जिन्दगी की कमाई) और बीस साल पहले तिरोल में ली गई एक तस्वीर थी। इस तस्वीर में उसकी आंखें तेज रोशनी से चौंधिया गई थीं और उनसे ठीक वैसी ही दुखद अभिव्यक्ति

हो रही थी, जिस अभिव्यक्ति से उसने अपनी बर्खास्तगी के हुक्म की मालिक से पुष्टि पाई थी।

बहुत परेशान होकर बैरन ने घंटी बजाकर एण्टन को बुलाया और पूछा कि क्रेसेन्ज अपने सामान को उसकी मेज पर क्यों रख गई है। एण्टन अपनी दुश्मन को बुलाने के लिए गया कि वह आये और उसकी सफाई दे, लेकिन क्रेसेन्ज न रसोई में मिली, न सोने के कमरे में और न उस इमारत में और कहीं।

अगले दिन सुबह अखबार में खबर छपी कि कोई चालीस साल की एक स्त्री डैन्यूब में डूबकर मर गई। तब कहीं मालिक और नौकर को पता चला कि लेपोरैला का क्या हुआ!

●